

## अध्याय-8

### बंदर – बांट

#### 1 मार्क

1. इस कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर. मुख्य संदेश है कि हमें लालच नहीं करना चाहिए और समझदारी से काम करना चाहिए।

2. बंदर ने क्या किया शिला के साथ?

उत्तर. बंदर ने शिला को खोलने की कोशिश की थी ताकि वह शिला से छिपी चीज़ें प्राप्त कर सके।

3. बंदर ने शिला को कैसे खोलने की कोशिश की?

उत्तर. बंदर ने चोटी, टांगे और दांत से शिला को खोलने की कोशिश की।

4. शिला क्यों फटी?

उत्तर. शिला फटी क्योंकि बंदर ने अपनी बेवकूफी में उसे खोलने की कोशिश करते समय उसमें दांत घुसा दिया था।

**5. बंदर ने खोलने के लिए क्या इस्तेमाल किया?**

**उत्तर.** बंदर ने अपनी चोटी, टांगे और दांत इस्तेमाल किये शिला को खोलने के लिए।

**6. बंदर को किसी ने क्या सिखाया?**

**उत्तर.** बंदर को यह सिखाया गया कि बिना सोचेसमझे और बेवकूफी में किसी काम का प्रयास करना खतरनाक हो सकता है।

**7. शिला के अंदर क्या था?**

**उत्तर.** शिला के अंदर कुछ प्राचीन चीज़ें छिपी हुई थीं।

**8. कहानी के आखिरी में क्या हुआ?**

**उत्तर.** कहानी के आखिरी में, शिला फट गई और बंदर को उसमें छिपी चीज़ें नहीं मिली।

## 2 मार्क

### 1. बंदर के व्यवहार से क्या सिखने को मिलता है इस कहानी से?

**उत्तर.** बंदर का व्यवहार यह दिखाता है कि अगर हम लालच में आकर बिना सोचेसमझे किसी काम को करने की कोशिश करते हैं, तो हमें नुकसान हो सकता है। यह हमें समझाता है कि सोचसमझकर ही किसी काम को करना चाहिए।

### 2. शिला के फटने के बाद बंदर का क्या व्यवहार था?

**उत्तर.** शिला के फटने के बाद, बंदर का व्यवहार था कि वह बहुत दुखी था और उसने समझा कि उसकी बेवकूफी ने उसे नुकसान पहुंचाया है।

### 3. कहानी में शिला के फटने का क्या मतलब था?

**उत्तर.** शिला के फटने से सीखने का मतलब था कि हमें बिना सोचेसमझे किसी चीज़ को खोलने का प्रयास करना खतरनाक हो सकता है और हमें समझदारी से काम करना चाहिए।

### 4. कक्कू और बंदर – बांट कहानियों के बीच क्या समानता है?

**उत्तर.** दोनों कहानियों में एक सामान्य संदेश है कि लालच और बेवकूफी से बचना चाहिए और मेहनत से काम करना चाहिए।

### **5. शिला के फटने के बाद बंदर का व्यवहार सिखाता है क्या?**

**उत्तर.** शिला के फटने के बाद, बंदर का व्यवहार हमें यह सिखाता है कि हमें हर काम को सोचसमझकर करना चाहिए, लालच नहीं करना चाहिए, और विवेकपूर्ण तरीके से काम करना चाहिए।

### **6. कहानी का मुख्य संदेश क्या है बंदर – बांट की?**

**उत्तर.** 'बंदर – बांट' की कहानी का मुख्य संदेश है कि हमें बेवकूफी और लालच में नहीं पड़ना चाहिए, और हमें सोचसमझकर ही काम करना चाहिए।

## 4 मार्क

**1. कहानी में बंदर का व्यवहार और उसकी बेवकूफी कैसे प्रमुख किरदारों को प्रकट करती है?**

**उत्तर.** 'बंदर – बांट' कहानी में, बंदर का व्यवहार और उसकी बेवकूफी उसके असमझी को दर्शाती है। वह शिला को खोलने के लिए चोटी, टांगे, और दांत से कोशिश करता है, जो उसकी बेवकूफी को प्रकट करता है। यह उसकी असमझी और गलत धारणाओं का प्रतीक है।

**2. बंदर के व्यवहार से कहानी का क्या संदेश है?**

**उत्तर.** बंदर के व्यवहार से कहानी का संदेश है कि हमें सोचसमझकर ही काम करना चाहिए। बिना सोचेसमझे और बेवकूफी में किसी काम की कोशिश करना नुकसानदायक हो सकता है। यह संदेश हमें यह बताता है कि हमें विवेकपूर्णता से काम करना चाहिए।

**3. बंदर की बेवकूफी से क्या सिखने को मिलता है?**

**उत्तर.** बंदर की बेवकूफी से हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें बेवकूफी में नहीं पड़ना चाहिए और हमें हर काम को सोचसमझकर करना चाहिए। अगर हम बेवकूफी में किसी काम को करने की कोशिश करते हैं, तो हमें नुकसान हो सकता है।

**4. शिला के फटने की घटना कैसे बंदर की बेवकूफी को प्रकट करती है?**

**उत्तर.** शिला के फटने की घटना बंदर की बेवकूफी को प्रकट करती है क्योंकि बंदर ने बिना सोचेसमझे और बेवकूफी में शिला को खोलने की कोशिश की, जिससे शिला नहीं खुली बल्कि फट गई।

5. बंदर के प्रति किस प्रकार की सीख मिलती है इस कहानी से?

उत्तर. इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें विवेकपूर्णता से काम करना चाहिए, और हमें बेवकूफी में नहीं पड़ना चाहिए। बिना सोचेसमझे किसी काम को करने का प्रयास करना खतरनाक हो सकता है।

6. कहानी के किस भाग में बंदर की बेवकूफी को सबसे अधिक प्रकट किया गया है?

उत्तर. कहानी के मध्य भाग में बंदर की बेवकूफी को सबसे अधिक प्रकट किया गया है, जहां उसने शिला को खोलने की कोशिश की और फिर शिला को फोड़ दिया।

## रिक्त स्थान भरें

1. बंदर ने शिला को खोलने की कोशिश करते समय उसने अपनी \_\_\_\_, \_\_\_\_, और \_\_\_\_ से कोशिश की।

उत्तर .चोटी, टांगे, और दांत

2. बंदर ने अपनी बेवकूफी में शिला को खोलने की कोशिश की, जिससे उसने शिला को नहीं खोला बल्कि \_\_\_\_ दिया।

उत्तर .फोड़ दिया

3. शिला के फटने से सीखने का मतलब है कि हमें हर काम को \_\_\_\_ करना चाहिए।

उत्तर .सोचसमझकर

4. कहानी में शिला के फटने के बाद बंदर का व्यवहार \_\_\_\_ हो गया।

उत्तर .बदल

5. बंदर – बांट कहानी में मुख्य संदेश है कि हमें \_\_\_\_\_ में नहीं पड़ना चाहिए।

उत्तर .बेवकूफी में नहीं पड़ना चाहिए

6. शिला के फटने की सम्भावना बंदर को पहले ही \_\_\_\_\_ चली जानी चाहिए थी।

उत्तर .पता चली जानी चाहिए थी

7. बंदर की बेवकूफी से हमें यह सिखने को मिलता है कि हमें \_\_\_\_\_ से काम करना चाहिए।

उत्तर .विवेकपूर्णता से काम करना चाहिए

8. शिला के फटने के बाद बंदर ने समझा कि उसकी बेवकूफी ने उसे \_\_\_\_\_ पहुंचाया है।

उत्तर .नुकसान

9. बंदर की चालाकी और बेवकूफी उसकी \_\_\_\_\_ को दर्शाती है।

उत्तर .असमझी

10. बंदर ने शिला को खोलने के लिए \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ से कोशिश की थी।

उत्तर .चोटी , टांगे

## सारांश.

"बंदर – बांट" का अवधारणा एक कहानी के चारों ओर घूमती है, जहां एक बंदर, उत्सुकता और सोच विचार किए बिना, अपने शरीर के अंगों, जैसे कि उसके सिर, दांत और पैरों का उपयोग करके एक नट को खोलने की कोशिश करता है। बंदर की कोशिशें, उसकी मूर्खता और विचारशून्यता के चलते, नट को खोलने की बजाय टूट जाता है। इस परिणामस्वरूप, बंदर को निराशा होती है और उसे अपने कार्यों के परिणामों का अहसास होता है।

यह कहानी हमें सिखाती है कि किसी भी कार्य को करने से पहले सोचना कितना महत्वपूर्ण है और बिना विचार किए या बुद्धिमानी से काम न करने की क्या खतरे हो सकते हैं। यह बात दिखाती है कि हर कार्य को समझदारी और सोचसमझकर करना चाहिए, केवल अनुभव या उत्साह पर भरोसा नहीं करना चाहिए। समग्र रूप में, यह कहानी व्यक्तियों को प्रेरित करती है कि वे हर कार्य को विवेकपूर्णता और समझ से देखें, मूर्खता और इम्पल्सिव व्यवहार से बचें।